International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 83-85

बंदा सिंह बहादुरः योगदान व बलिदान

Ravita Rani

Research Scholar (History), NIILM University, Haryana, India

प्रस्तावना

बंदा सिंह बहादुर को अपने शहादत के कारण इस नाम की उपलब्धि मिली थी। इनके बचपन का नाम लक्ष्मण देव था। इन्होंने मुगलों को नाकों चने चबवा दिये थे। इनसे मुगल बादशाह को भय हो गया था कहीं उनकी सत्ता हाथ से न निकल जाए। ये गुरू गोविन्द के संपर्क में आए और उनके मिशन की पूर्ति के लिए इन्होंने अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया था।

ये योद्धा ही नहीं थे बल्कि तपस्वी, सिख राज्य के संस्थापक, समाज के निम्न वर्ग के हमदर्द व किसानों के मसीहा भी थे। बंदा सिंह बहादुर वो मिशाल थी जिन्होंने मुसलमानों के सामने झुकना नहीं बलिदान देना पसंद किया था।

स्वतंत्रता संग्राम के लिए बंदा सिंह बहादुर ने जिस बहादुरी का परिचय दिया वह शायद ही कोई दे पाता हो। मुगल बादशाह फरूखशियार ने 9 जून 1716 ई. को जंजीरें बांधकर दिल्ली जाया गया जहां वर्तमान में हार्डिंग लाइब्रेरी है। उनके चार साल के बेटे अजय सिंह के टुकड़े–2 करके उनका दिल निकालकर बंदा सिंह बहादुर के मुंह में डाल दिया। बंदा के शरीर से चमड़ी उतारी गई। हाथी के नीचे कुचलवाया गया। स्वतन्त्रता के इतिहास में बंदा सिंह बहादुर के एक अध्याय का अन्त कर दिया। इस शोध पत्र में बंदा सिंह बहादुर के जीवन स्वतन्त्रता में उनके योगदान व बलिदान की अन्वेषणा पर विचार करेंगे।

साहित्य सर्वेक्षण

अग्निहोत्री कुलदीप चन्द–बंदा सिंह ने रचा इतिहास

प्रवक्ता कॉम का उद्देश्य है कि बंदा सिंह बहादुर ने अनेक यातनाएं मिलने पर भी अपने को झुकने नहीं दिया। अपनी शाहदत को सबसे ऊपर रखा और अन्त में मौत के घात उतरना स्वीकार किया। स्वतन्त्रता संग्राम के इस अध्याय को बीते आज तीन सौ साल हो गए। आज भी यह घटना रौंगटे खड़े कर देती है।

चन्द्र सतीश (2004)[2] उत्तर भारत में सिक्ख विद्रोह तथा बंदा बहादुर के युद्ध प्रणाली का वर्णन किया है कि कैसे खुद बादशाह पंजाब में रहकर भी इस विद्रोह को खत्म नहीं कर पा रहा था। बंदा सिंह बहादुर ने अपे प्रयत्नों से सिक्खों में एक विशिष्ट राजनीतिक परंपरा की पुष्टि की और सिक्ख राज्य स्थापना में अपना योगदान दिया।

हिंदी मिलाप (जून 13, 2015) बंदा सिंह बहादुर बलिदान की अनूठी मिसाल का उद्देश्य है कि बंदा सिंह बहादुर की विजय, उनको दी गई यातनाओं का वर्णन किया गया है।

The India Post (June 7,2016) बंदा सिंह बहादुर का बलिदान का उद्देश्य है कि बंदा सिंह बहादुर ने यातनाओं के आगे झुकना स्वीकार नहीं किया। अपने नाम के तीनों शब्दों बंदा, सिंह व बहादुर को सार्थक किया और मातृभूमि के लिए बलिदान दे दिया।

The India Post (June 8, 2016) बंदा सिंह बहादुर को यातनाएं व उनकी हत्या का उद्देश्य है कि किस प्रकार बंदा सिंह बहादुर को यातनाएं दी गई। उन्होंने किसी भी मुसीबत के समय हार नहीं मानी। अन्ततः बलिदान होना स्वीकार किया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बंदा सिंह बहादुर के योगदान व बलिदान का विश्लेषण करना।
2. सिक्ख विद्रोह के अन्तर्गत स्थिति को बतलाना।

शोध प्रणाली

आंकड़े संचय पद्धति

इसमें द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग हुआ है। बंदा सिंह बहादुर के बाल्यकाल से मृत्यु पर्यन्त (1670ई.–1716ई.) तक के काल का अध्ययन करूँगी।

नमूना प्रारूप

शोध क्षेत्र को देखते हुए मैंने सहुलियत प्रतिचयन व नियतांश प्रतिचयन का प्रयोग किया है।

आंकड़े विश्लेषण

ऐतिहासिक अनुसंधान का प्रयोग किया है।

विवरण

बंदा सिंह बहादुर अपने समय के एक महान सिक्ख योद्धा सेनानायक थे। वे योद्धा होने के साथ–2 तपस्वी, सिक्ख राज्य के संस्थापक, आम लोगों व किसानों के हमदर्द थे। गुरू गोविन्द सिंह के संपर्क में आने के बाद उन्होंने खुद को बहुत बुलंद कर लिया था। उन्होंने गोविन्द सिंह के बच्चों की शहादत का बदला लिया, प्रभुसत्ता सम्पन्न लोक राज्य स्थापित किया, जिसकी राजधानी लौहगढ़ की नींव रखी। किसानों को जमीन का मालिक बनाया तथा गुरू गोविन्द सिंह के नाम के सिक्के व मोहर जारी किए।

जीवन परिचय

बंदा सिंह बहादुर का जनम कश्मीर के पूंछ जिले की राजौरी तहसील के गांव जारे का गढ़ में 27 अक्तूबर 1670 ई. को हुआ था। इनके बचपन का नाम लक्ष्मण देव था। इनके पिता का नाम रामदेव था। इनको बचपन से ही कुश्ती व शिकार का शौक था। इनके पिता जी स्थानीय जमींदार थे उन्होंने अपने बेटे को घुड़सवारी, तीर चलाना, शिकार खेलना व कुश्ती आदि की शिक्षा में निपुण बनाया। एक घटना से ''जब लक्ष्मण देव 15 वर्ष के थे तो एक गर्भवती हिरणी का शिकार कर लिया'' उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। जब वे 15 वर्ष के थे तो उन्होंने एक हिरणी का शिकार किया वह हिरणी गर्भवती थी। हिरणी के पेट से एक शिशु निकला और तड़पकर वहीं मर गया। इस घटना से उनका मन द्रवित हो गया और उन्होंने गृह त्याग कर दिया।

लक्ष्मण दवे से बंदा सिंह बहादुर का सफर

एक बार जानकी प्रसाद नामक साधु उनके गांव में आया। लक्ष्मण देव ने अपने मन की व्यथा उनको सुनाई। जानकी प्रसाद के साथ गृह त्याग करके उनके लाहौर नगर के आश्रम में चले गए। अतः जानकी प्रसाद ने उनका नाम माधव दास रख दिया। 1686 ई. को लाहौर नगर के पास कसूर क्षेत्र में बैसाखी के मेले पर वे रामदास साधु से मिले और उनको अपना गुरू बनाया। ज्ञान की खोज में वे यहां से दक्षिण भारत की ओर चले गए। वे नासिक के पास पंचवटी में 1691ई. में एक आधोऽनाथ योगी, रिद्धि सिद्धि व तांत्रिक विद्या के लिए प्रसिद्ध था। माधोदास की सेवा से प्रसन्न होकर अधोऽनाथ ने योग रिद्धि सिद्धि व तांत्रिक विद्या में माधोदास को भी निपुण कर दिया। अब माधो दास ने अधोऽनाथ की मृत्यु के बाद गोदावरी नदी के तट पर (नांदेड़ के पास) शांत व सुंदर जगह पर अपना डेरा बना लिया।

गुरू गोविन्द सिंह से प्रेरणा

31 सितम्बर 1708 को गुरू गोविन्द सिंह माधोदास से उनके आश्रम में मिले। गुरू गोविन्द ने माधोदास को उपदेश दिया– ''राजपूत अगर संयासी बनेगा तो देश धर्म को कौन बचाएगा। राजपूत का पहला कर्त्तव्य रक्षा करना है।'' अनाथ व अबलायें तुमसे रक्षा की आशा करती हैं, गौ माता छुरियों के नीचे तड़पती हुई तुम्हारी तरफ देख रही हैं, हमारे मंदिर तोड़े जा रहे हैं, यहां किस धर्म की आराधना कर रहे हो तुम। तुम वीर हो, अचूक धनुर्धर हो, इस धर्म पर आपत्ति काल आया है और तुम राज्य छोड़कर तपस्वी हो गए। पंजाब में सिक्खों पर अमानवीय यातनाओं और गुरू गोविन्द सिंह के 7 वर्ष व 9 वर्ष के पुत्रों की नृशंस हत्या ने लक्ष्मण देव को विचलित कर दिया और वे सिक्ख धर्म में दीक्षित हुए।

गुरू गोविन्द सिंह ने माधोदास को अमृत पान कराया, स्वयं उन्हें अपनी तलवार प्रदान की और उन्हें नया नाम बंदा सिंह बहादुर दिया। मानसिक रूप से बंदा सिंह बहादुर को मुगलों के साथ मुकाबला करने के लिए तैयार कर दिया।

खालसे का जत्थेदार (सेनानायक) नियुक्त किया। सिक्खों के नाम हुक्मनामा भी दिया। सभी सिक्खों को खालसा झंडे के नीचे एकत्रित होने का आदेश भी दिया। एक नारा एक झंडा, अपने 5 तीर और शस्त्र भी दिए। पांच प्यारे

1. बाबा विनोद सिंह
2. बाबा कहान सिंह
3. बाबा बाजसिंह
4. भाई दयासिंह
5. भाई रणसिंह और 20 सिक्ख भी दिए।

इस तरह 25 सिक्खों के साथ बंदा सिंह बहादुर ने पंजाब की तरफ कूच किया। एक अफगान ने निजी बैर के कारण तपस्या में लीन गुरू गोविन्द पर कटार से वार कर दिया। अभी घाव ठीक नहीं हुआ कि 12 अक्तूबर 1708 को गुरू गोविन्द का देहान्त हो गया।

बंदा सिंह बहादुर जब दिल्ली के पास पहुंचा तब उसे गुरू गोविन्द सिंह की मृत्यु का समाचार मिला। दिल्ली से 35 मील दूर खरखौदा में बंदा सिंह बहादुर ने गुरू का झंडा गाड़ दिया।

सरहिन्द विजय अभियान

बंदा सिंह बहादुर को नांदेड़ से हिसार पहुंचने में एक साल लग गया। बंदा सिंह बहादुर हिसार होते हुए टोहाना, सोनीपत, कैथल, सामाना व सढ़ौरा तक आ पहुंचा। समाना तो गुरू गोविन्द सिंह के पुत्रों के हत्यारे व जीर खान का निवास स्थान था। उसके सढ़ौरा से 5 कोस दूर नाहन नगर के दक्षिण में मुखलीसर नामक स्थान पर फरवरी 1710 को अपनी राजधानी लौहगढ़ स्थापित की।

22 मई 1710 को सरहिन्द के 20 किलोमीटर पहले चप्पड़ चिड़ी नाम स्थान पर वजीर खान की सेना में मुकाबला हुआ और 24 मई 1710ई. को मुगलों का नवाब वजीर खान मारा गया। सरहिन्द पर इस प्रकार बंदा सिंह बहादुर ने विजय प्राप्त कर ली।

जून 1710 को लाहौर अभियान

मलेरकोटला, मोरिडा, होश्यिारपुर, जालंधर, बटाला, अमृतसर से होता हुआ बंदा सिंह बहादुर लाहौर तक जा पहुंचा। लाहौर के अन्दर दिवारों में प्रवेश तो नहीं किया लेकिन शहर से बाहर इस्लाम का शासन समाप्त कर दिया था।

गृहस्थ जीवन

दिसम्बर 1710 तक बंदा सिंह बहादुर को जिंदा या मूर्दा पकड़ने के आदेश जारी कर दिए गए थे लेकिन बंदा सिंह बहादुर अपने पुश्तैनी इलाकों में जाकर रहने लगे थे। यहां उन्होंने विवाह कर लिया और गृहस्थ जीवन जीने लगे। एक बेटे अजय सिंह के पिता बन गए। अब वापिस वे रणक्षेत्र में आ गए और अपना डेरा गुरूदासपुर के पास नंगल नाम स्थान पर लगाया।

बंदा सिंह बहादुर का घेराव

दिल्ली के तख्त पर 1713ई. में फरूखशियार बैठ गया उसने बंदा सिंह बहादुर को जिंदा या मूर्दा पकड़ने के आदेश किए। गुरूदासपुर नंगल किले का घेराव मुगलों ने कर लिया और घेरा सख्त होता जा रहा था। नवम्बर 1715 में सैनिकों के भूखे मरने की नौबत आ गई। उसके कुछ साथी चुपचाप उसे छोड़कर चले गए। 17 दिसम्बर 1715 को बंदा सिंह बहादुर ने किले के दरवाजे खोल दिए। दोनों पक्षों के लोग मारे गए। अन्तिम लड़ाई लड़ी गई। मुगल सैनिकों ने 714 लोगों को बंदी बना लिया। बंदा सिंह बहादुर को जंजीरों में जकड़ लिया गया।

बंदा सिंह बहादुर पर यातनाएँ व उनकी शहीदी

9 जून 1716 को बंदा सिंह बहादुर को दिल्ली लाया गया। उनको पिंजरे में डालकर, पिंजरा हाथी पर रखा गया था। गोद में उनका चार वर्षीय पुत्र अजय सिंह था। 300 सिर छक्कड़ों में दालकर लाए गए। पीछे–पीछे 794 लोग जंजीरों में बंधे हुए थे। हर रोज 100 आदमियों का कत्ले आम किया जाता। बंदा सिंह बहादुर व बंदियों को इस्लाम कबूल करने का विकल्प दिया गया लेकिन सभी ने मना कर दिया और मरना कबूल किया।

9 जून 1716 को बंदा सिंह बहादुर को उसका बेटा स्वयं उसी के हाथों से मारने के लिए कहा लेकिन बंदा सिंह बहादुर ने मना कर दिया। मुगल सैनिकों ने उसके पुत्र अजय सिंह के टुकड़े–2 करके उसके बेटे का दिल बंदा सिंह बहादुर के मुंह में डाल दिया। फिर बंदा सिंह बहादुर की बाईं आंख निकाली फिर दाई आंख निकाली। शरीर से उसकी चमड़ी उतारी गई। हाथी के पैरों तले रौंदा गया। अन्त में उनका शीश काट दिया गया। इस प्रकार अपने नाम के तीनों शब्दों को सार्थक करते हुए बंदा सिंह बहादुर शहीद हो गए।

पंजाब सरकार ने भारतीय इतिहास के इस स्वर्णिम अध्याय को अमर करने के लिए एक विजय स्तम्भ का उद्घाटन 30 नवम्बर 2011 को किया है। बंदा सिंह बहादुर के शहीदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरू गोविन्द की 350वीं वर्षगांठ को देश भर में मनाने की घोषण की और 100 करोड़ की धनराशि आबंटित कर दी गई है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष तौर पर बंदा सिंह बहादुर एक महान सिक्ख योद्धा थे। जिन्होंने अपने दुःख व तकलीफ को कुछ नहीं समझा और हंसते–2

बलिदान हो गए। बंदा सिंह बहादुर में बड़ी वीरता व साहस था। उसी साहस ने पंजाब व हरियाणा के निम्न व जाट समुदाय को सैन्य प्रशिक्षण देकर एक मार्शल बना दिया था। बंदा सिंह बहादुर ने पंजाब व हरियाणा में मुसलमानों की ताकत का कुचल दिया था। कौला प्रथा (नई नवेली दुल्हन को मुसलमानों के घर में रखा जाता था फिर वह अपने सुसराल में प्रवेश करती थी) जैसी घिनौनी प्रथा को बंदा सिंह बहादुर ने कुछ हद तक खत्म कर दिया था। जाट इस प्रथा के विरोधी हो गए थे। ये सब जाटों को दिए गए सैन्य प्रशिक्षण से संभव हुआ था।

अगर बंदा सिंह बहादुर को जकड़ कर नहीं मारा होता तो भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का अध्याय कुछ और ही होता। बंदा सिंह बहादुर ने अपने तीनों मानों को सार्थक किया और राष्ट्रीयता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी और हर भारतीय ने उनके त्याग व बलिदान को याद करना चाहिए। बंदा सिंह बहादुर राष्ट्रीयता के लिए त्याग व बलिदान की धरोहर थे। इतिहास में ऐसी शख्सियत बहुत कम मिलती हैं। ऐसी शहादत को शत्–शत् नमन।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.pravakta.com/bandasing-bahadur-history.com posed by - Kuldeep-chand-agnihotri?
2. चन्द्र सतीश (2004) उत्तर मुगलकालीन भारत, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली, संशोधित संस्करण 2004
3. www.hindimilap.com/banda-sing-bahadur-sacrifice/2015/06/13
4. www.theindiapost.com/hindi.news/article
5. http://mpjsgwalior.com/3%20hindi
6. https://hi.wikipedia.org